

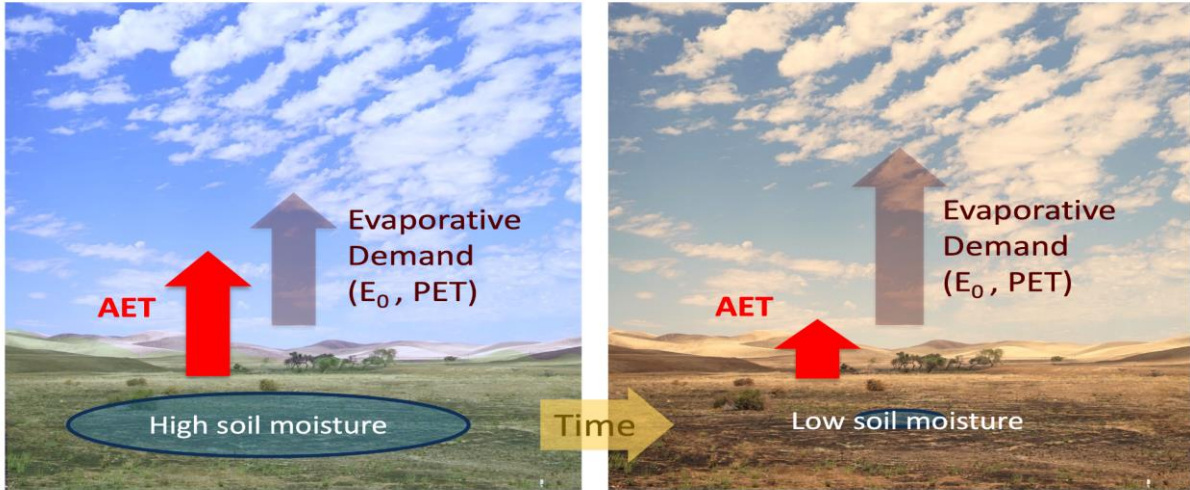
प्रारंभिक परीक्षा

वाष्पीकरणीय मांग (Evaporative Demand)

संदर्भ

भारत में बढ़ती वाष्पीकरणीय मांग देश की जलवायु डेटा संरचना और वैज्ञानिक अनुसंधान क्षमताओं की गंभीर कमियों को उजागर कर रही है।

वाष्पीकरणीय मांग-

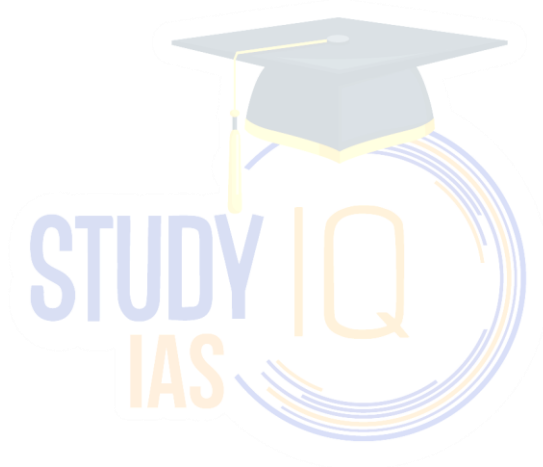


ऊपर चित्र में दिखाया गया है कि कैसे उच्च मृदा नमी और जल उपलब्धता के तहत, वास्तविक वाष्पोत्सर्जन (AET) का परिमाण वाष्पीकरणीय मांग के समान हो सकता है। समय के साथ, यदि मिट्टी सूख जाती है, तो वाष्पीकरणीय मांग अक्सर बढ़ जाएगी (क्योंकि हवा का तापमान बढ़ता है और अब सूखी भूमि की सतह के जवाब में आर्द्रता कम हो जाती है) लेकिन AET कम हो जाती है, जो वाष्पित होने और वाष्पोत्सर्जन के लिए सतह पर उपलब्ध पानी की कम मात्रा द्वारा सीमित होती है।

- **वाष्पीकरणीय मांग** यह मापती है कि यदि पर्याप्त जल उपलब्ध हो तो वायुमंडल भूमि से कितना जल वाष्पित करना चाहता है।
- यह संभावित वाष्पीकरण को दर्शाता है, वास्तविक वाष्पीकरण को नहीं - जो पानी की कमी होने पर कम हो सकता है।
- **मुख्य चालक:** वाष्पीकरणीय मांग निम्नलिखित से प्रभावित होती है:
 - तापमान (उच्च तापमान से मांग बढ़ती है)
 - हवा की गति
 - आर्द्रता (कम आर्द्रता = अधिक मांग)
 - बादल छाए रहेंगे (साफ आसमान से मांग बढ़ेगी)
- **सूखा और आग से संबंधित लिंक:**
 - उच्च वाष्पीकरणीय मांग से सूखा और भी गंभीर हो सकता है।
 - इससे मिट्टी और वनस्पति सूख जाती है, जिससे जंगल में आग लगने का खतरा बढ़ जाता है।
- **प्रारंभिक चेतावनी संकेतक:** सामान्य से अधिक वाष्पीकरणीय मांग की विस्तारित अवधि निम्नलिखित का पता लगाने में मदद कर सकती है:
 - सूखे की शुरुआत
 - सूखे की तीव्रता

- आग का बढ़ा हुआ खतरा
- **पर्यावरणीय प्रभाव:**
 - मिट्टी की नमी कम हो जाती है
 - फसलों और पौधों पर दबाव पड़ता है
 - वनस्पति को अधिक ज्वलनशील बनाता है
- **जंगल की आग के लिए गंभीर स्थिति:** जब कम वर्षा (सामान्य से कम वर्षा) उच्च वाष्पीकरणीय मांग के साथ ओवरलैप होती है, तो यह गंभीर रूप से शुष्क ईंधन की स्थिति पैदा करती है, जिससे जंगल की आग तेजी से फैलती है।

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)



स्पैडेक्स-2 मिशन

संदर्भ

इसरो स्पैडेक्स-2 को प्रक्षेपित करने के लिए तैयार है, जिसका लक्ष्य दो उपग्रहों को दीर्घवृत्तीय कक्षा में स्थापित करना है।

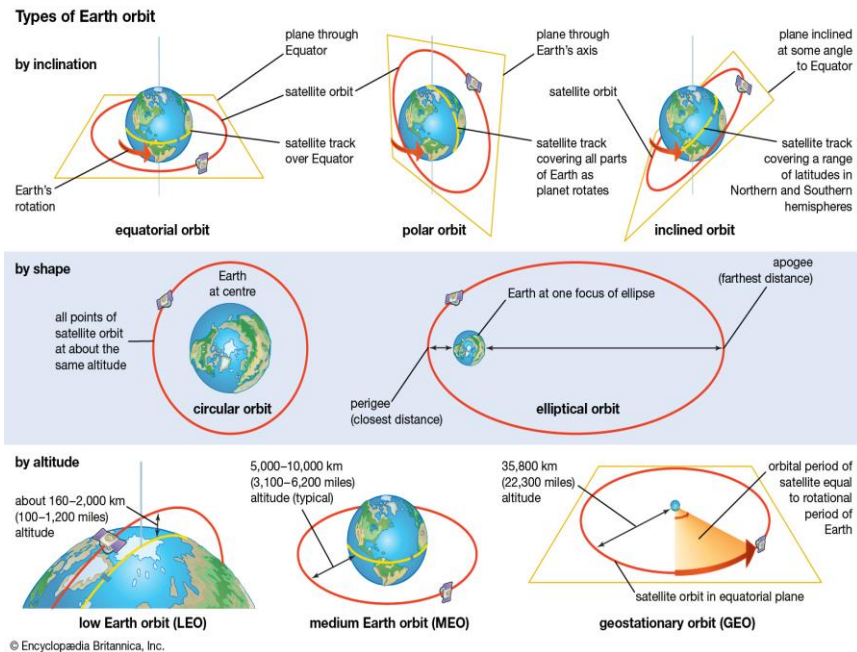
स्पैडेक्स मिशन(SPADEX Mission) के बारे में -

- **पूरा नाम:** SPADEX का पूरा नाम है **Space Docking Experiment**
- **प्रकार:** यह एक लागत-कुशल प्रौद्योगिकी प्रदर्शन मिशन है।
- **उद्देश्य:** पृथ्वी की निचली वृत्ताकार कक्षा में दो छोटे अंतरिक्ष यान (SDX01 - चेज़र, SDX02 - टारगेट) के रेंदेवू डॉकिंग और अनडॉकिंग के लिए प्रौद्योगिकी का विकास और प्रदर्शन करना।
- **प्रक्षेपण यान:** PSLV (Polar Satellite Launch Vehicle) द्वारा।
- **महत्त्व:** अंतरिक्ष में डॉकिंग एक अत्यंत महत्वपूर्ण तकनीक है जो निम्नलिखित कार्यों के लिए आवश्यक है:
 - चंद्रमा के लिए मानव मिशन।
 - चंद्र सतह से नमूना वापसी मिशन।
 - भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (Bharatiya Antariksh Station – BAS) के निर्माण और संचालन के लिए।
 - किसी एक मिशन लक्ष्य के लिए कई रॉकेट प्रक्षेपणों के समन्वय को संभव बनाना — यह दीर्घकालिक या खंडीय (modular) अंतरिक्ष अभियानों के लिए अनिवार्य है।
 - इस मिशन के माध्यम से भारत अंतरिक्ष यान डॉकिंग तकनीक का प्रदर्शन करने वाला विश्व का चौथा देश बनना चाहता है — अमेरिका, रूस और चीन के बाद।

दीर्घवृत्तीय कक्षा(Elliptical Orbit) के बारे में -

- **परिभाषा:** दीर्घवृत्ताकार कक्षा एक प्रकार की गैर-वृत्ताकार कक्षा है, जहां किसी ग्रह या वस्तु के चारों ओर उपग्रह का पथ एक दीर्घवृत्त (अंडाकार आकार) बनाता है, न कि एक पूर्ण वृत्त।
- **आकार और ज्यामिति:**

- इसमें दो केन्द्र बिन्दु (foci) होते हैं; केन्द्रीय पिंड (जैसे पृथ्वी) एक फोकस पर स्थित होता है, केन्द्र पर नहीं।
- **उत्केन्द्रता** द्वारा परिभाषित (कक्षा कितनी फैली हुई है); **उत्केन्द्रता**



= 0 वृत्ताकार है, $0 < e < 1$ अण्डाकार है।

- **मुख्य पैरामीटर:**
 - **उपभू(Perigee):** पृथ्वी की कक्षा का सबसे निकटतम बिंदु।
 - **अपभू(Apogee):** पृथ्वी से कक्षा का सबसे दूरस्थ बिंदु।
- **गति भिन्नता:**
 - गुरुत्वाकर्षण खिंचाव (केप्लर का दूसरा नियम) के कारण उपग्रह उपभू के पास तेजी से तथा अपभू के पास धीमी गति से चलता है।
- **दीर्घवृत्तीय कक्षाओं के उपयोग:**
 - परिवर्तनशील ऊँचाई की आवश्यकता वाले पृथ्वी अवलोकन उपग्रह।
 - ध्रुवीय या उच्च अक्षांश क्षेत्रों को कवर करने वाले संचार उपग्रह।
 - किसी विशिष्ट क्षेत्र में लंबे समय तक रहने की आवश्यकता वाले मिशन।
 - SPADEX-2 जैसे अंतरिक्ष प्रयोग, जो अधिक जटिल कक्षीय पथों में भविष्य के डॉकिंग के लिए स्थितियों का अनुकरण करते हैं।
- **दीर्घवृत्तीय कक्षाओं के उदाहरण:**
 - **मोलनिया ऑर्बिट** - रूस द्वारा उच्च अक्षांश संचार के लिए उपयोग किया जाता है।
 - **जीटीओ (जियोस्टेशनरी ट्रांसफर ऑर्बिट)** - वृत्ताकार जियोस्टेशनरी कक्षा तक पहुंचने से पहले स्थानांतरण पथ के रूप में उपयोग किया जाता है।

स्रोत: [IndianExpress](https://www.indianexpress.com)



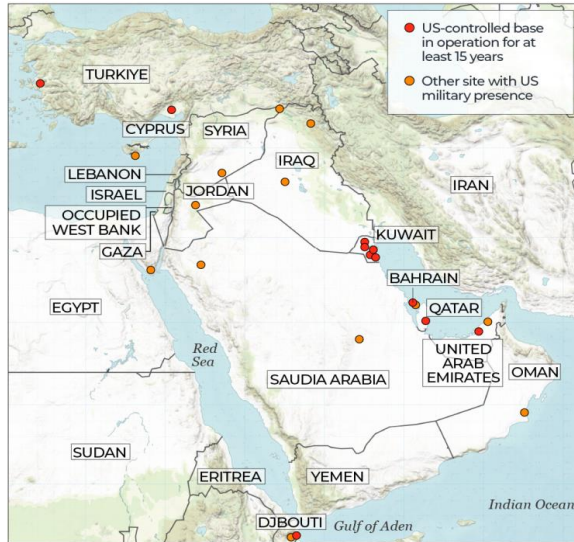
समाचार में स्थान

कतर तथा इराक में अमेरिकी अड्डे

MIDDLE EAST

US military presence in the Middle East

The United States has maintained a military presence in the Middle East for decades, currently stationing between 40,000 and 50,000 troops across at least 19 sites.



समाचार? ईरान ने कतर और इराक में अमेरिकी ठिकानों पर मिसाइल हमले किए।

कतर तथा इराक में अमेरिकी अड्डे -

अल-उदीद एयर बेस (कतर)

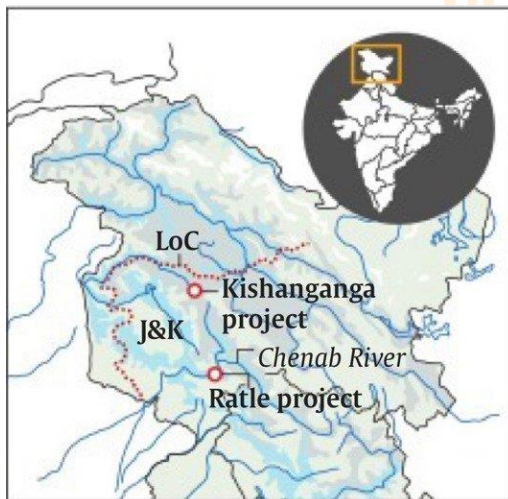
- **अवस्थिति:** दोहा, कतर के दक्षिण-पश्चिम में (फारस की खाड़ी के पार, ईरान से 190 किमी उत्तर में)।
- **महत्व:** पश्चिम एशिया में सबसे बड़ा अमेरिकी सैन्य अड्डा।
 - यह क्षेत्र में **अमेरिकी सेंट्रल कमांड (CENTCOM)** के मुख्यालय के रूप में कार्य करता है।

ऐन अल-असद एयर बेस (इराक) -

- **अवस्थिति:** पश्चिमी इराक।
- **महत्व:** यह एक प्रमुख अमेरिकी सैन्य प्रतिष्ठान है, जहां आईएसआईएस और अन्य क्षेत्रीय खतरों के खिलाफ अभियान में शामिल अमेरिकी सैनिक रहते हैं।

स्रोत: [TheHindu](#)

किशनगंगा और रतले जलविद्युत परियोजना



समाचार? भारत ने विश्व बैंक से सिंधु जल संधि (Indus Waters Treaty) के तहत चल रही विशेषज्ञ प्रक्रिया (expert proceedings) को स्थगित करने का अनुरोध किया है। यह कदम भारत द्वारा किशनगंगा और रतले परियोजनाओं पर पाकिस्तान की आपत्तियों के चलते संधि को निलंबित करने के बाद उठाया गया है।

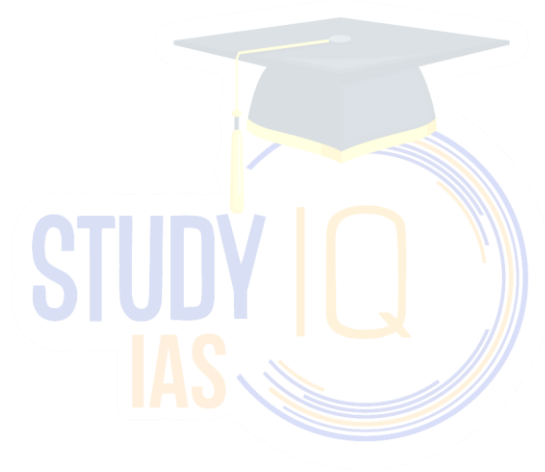
रतले जलविद्युत परियोजना के बारे में -

- **अवस्थिति:** किश्तवाड़ जिला, जम्मू और कश्मीर।
- **नदी:** चिनाब नदी पर स्थित

किशनगंगा जलविद्युत परियोजना के बारे में -

- **अवस्थिति:** जम्मू और कश्मीर के बांदीपुरा जिले में स्थित है।
- **नदी:** यह नदी किशनगंगा नदी (जिसे पाकिस्तान में नीलम नदी कहा जाता है) के पानी को एक सुरंग के माध्यम से बिजली उत्पादन के लिए एक बिजली स्टेशन तक ले जाती है।
- **अंतर्राष्ट्रीय निर्णय:** 2013 में, हेग स्थित स्थायी मध्यस्थता न्यायालय ने भारत के पक्ष

	में निर्णय दिया तथा कुछ पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों के साथ परियोजना को अनुमति प्रदान की। स्रोत: IndianExpress
--	---



संपादकीय सारांश

कृषि-उद्योग और भारत-अमेरिका समझौता

संदर्भ

चूंकि भारत और अमेरिका एक नए द्विपक्षीय व्यापार समझौते की दिशा में काम कर रहे हैं, भारत के चीनी-इथेनॉल और सोयाबीन प्रसंस्करण उद्योग अपने बाजारों पर संभावित रियायतों के प्रभाव को लेकर चिंतित हैं।

उद्योगों पर प्रभाव -

● चीनी-इथेनॉल उद्योग

- **फीडस्टॉक संतुलन के लिए खतरा:** जैव ईंधन के लिए इथेनॉल या आनुवंशिक रूप से संशोधित (जीएम) मक्का का आयात करने से गन्ना आधारित इथेनॉल उत्पादन कम हो सकता है, जिससे चीनी मिलों को नुकसान हो सकता है, जो पहले से ही स्थिर चीनी मांग से जूझ रहे हैं।

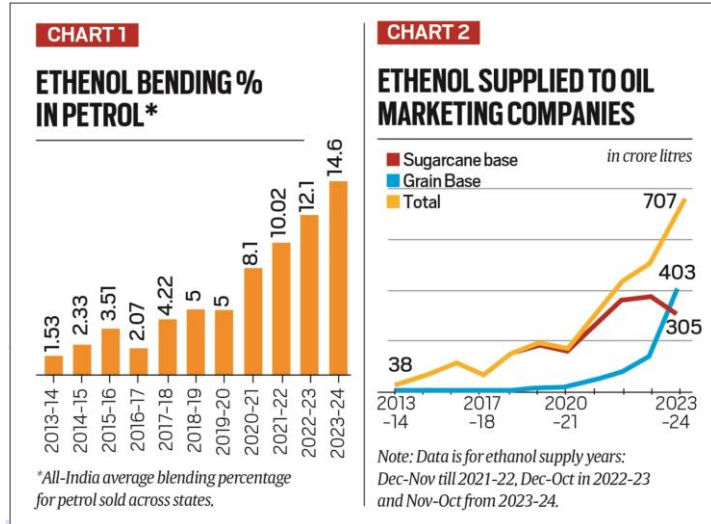
○ खाद्य-ईंधन संघर्ष:

इथेनॉल के लिए मक्का पर बढ़ती निर्भरता असंतुलन को बढ़ावा दे सकती है, कीमतें बढ़ा सकती है और पशुधन और मुर्गी पालन उद्योग के लिए कमी पैदा कर सकती है।

- **उदाहरण के लिए,** अब **68%** उत्पादन अनाज आधारित फीडस्टॉक्स (मुख्य रूप से मक्का) से होता है, तथा केवल **32%** उत्पादन गन्ने (गुड़ और जूस) से होता है।

● सोयाबीन प्रसंस्करण उद्योग

- **आर्थिक व्यवहार्यता संबंधी चिंताएं:** जीएम सोयाबीन का आयात करने से घरेलू प्रसंस्करणकर्ता प्रभावित होंगे, जो बंदरगाहों से बहुत दूर स्थित हैं, जिससे रसद लागत बढ़ेगी और स्थानीय स्तर पर उगाए जाने वाले सोयाबीन का स्थान भी ले लेगी।
- **किसानों की आजीविका:** आयात में वृद्धि से घरेलू सोयाबीन की कीमतों में गिरावट आ सकती है, जिससे लगभग 7 मिलियन सोयाबीन किसानों की आय को नुकसान पहुंचेगा और फसल की खेती के पैटर्न में बदलाव आएगा।

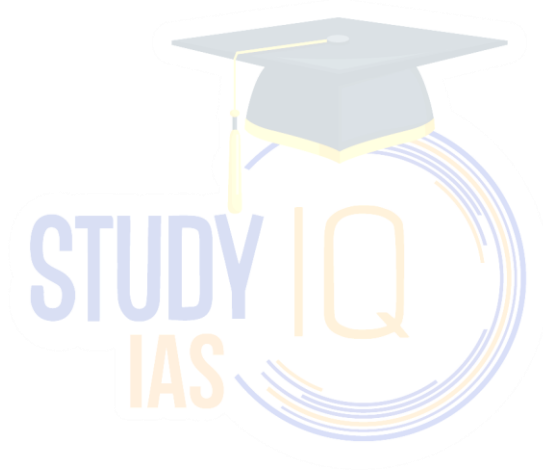


आगे की राह -

- **संतुलित व्यापार वार्ता:** भारत को घरेलू कृषि उद्योगों में सीमित व्यवधान सुनिश्चित करने के लिए व्यापार शर्तों पर रणनीतिक रूप से बातचीत करनी चाहिए, साथ ही अन्य पारस्परिक रूप से लाभकारी व्यापार अवसरों को भी सुरक्षित करना चाहिए।
- **शर्तों के साथ चुनिंदा आयात:** नियंत्रित आयात की अनुमति देना, स्थानीय कृषि को कम प्रभावित करने वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करें, साथ ही उप-उत्पादों के लिए निर्यात दायित्व भी शामिल करना।
- **घरेलू आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करना:** बुनियादी ढांचे और रसद दक्षता को बढ़ाना, घरेलू उद्योगों को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाना और वैश्विक मूल्य झटकों के प्रति लचीला बनाना।
- **किसानों के हितों की रक्षा:** किसानों को बाजार में उतार-चढ़ाव से बचाने के लिए लक्षित मूल्य-समर्थन तंत्र और फसल विविधीकरण प्रोत्साहन को लागू करना।

- **नवीन इथेनॉल नीति:** टिकाऊ इथेनॉल उत्पादन विधियों को प्रोत्साहित करना, खाद्य-आहार श्रृंखला पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाले बिना वैकल्पिक फीडस्टॉक्स की खोज करना।
- **सार्वजनिक परामर्श और उद्योग संवाद:** पारदर्शिता सुनिश्चित करने, संघर्षों को न्यूनतम करने और आम सहमति आधारित समाधान विकसित करने के लिए नीति विचार-विमर्श में इन उद्योगों के हितधारकों को शामिल करना।

स्रोत: [Indian Express](#)



दक्षिण एशियाई आर्थिक एकीकरण

संदर्भ

- हाल की दो बड़ी घटनाएं- ट्रम्प प्रशासन द्वारा लगाए गए पारस्परिक टैरिफ और पहलगाम में आतंकवादी हमले ने भारत के आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा परिदृश्य को हिलाकर रख दिया।
 - ये घटनाएं भारत द्वारा दक्षिण एशियाई देशों के साथ गहन क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने की तत्काल आवश्यकता को उजागर करती हैं।

दक्षिण एशियाई देशों के बारे में -

- **देश:** इस क्षेत्र में अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका (सामूहिक रूप से सार्क का गठन) शामिल हैं।
- **जनसंख्या:** वैश्विक जनसंख्या का लगभग 25% हिस्सा है।
- **संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद:** लगभग 5 ट्रिलियन डॉलर, जो अन्य प्रमुख आर्थिक ब्लॉकों की तुलना में बहुत कम है।

दक्षिण एशिया की संभावनाएं -

- **विशाल अप्रयुक्त बाजार:** संयुक्त राष्ट्र एशिया और प्रशांत के लिए आर्थिक और सामाजिक आयोग (UNESCAP) के एक अध्ययन के अनुसार, **दक्षिण एशिया में संभावित व्यापार वर्ष 2020 में \$172 बिलियन तक पहुँच सकता था**, जबकि **वास्तविक अंतर-क्षेत्रीय व्यापार केवल लगभग \$23 बिलियन** ही था।
- **व्यापार वृद्धि:** कुल व्यापार मूल्य में वृद्धि (2015-2022 के बीच \$1,335 बिलियन) के बावजूद, **अंतर-क्षेत्रीय व्यापार** कुल अंतराष्ट्रीय व्यापार का केवल 5-7% है - जो वैश्विक ब्लॉकों में सबसे कम है।
- **अप्रयुक्त क्षमता: 86%** से अधिक **व्यापार क्षमता का दोहन नहीं हो पाया है**। बांग्लादेश (93%), मालदीव (88%), पाकिस्तान (86%), तथा अन्य देशों में अप्रयुक्त व्यापार अनुपात सबसे अधिक है।

दक्षिण एशिया की संभावनाओं में बाधा डालने वाले मुद्दे -

- **उच्च व्यापार लागत:** अंतर-क्षेत्रीय व्यापार लागत माल के मूल्य का 114% है, जो अमेरिका (109%) जैसे दूर के भागीदारों के साथ व्यापार से अधिक है।
- **राजनीतिक तनाव:** सीमा विवाद, विश्वास की कमी और आतंकवाद व्यापार और क्षेत्रीय सहयोग को बाधित करते हैं।
- **अकुशल तंत्र:** SAFTA जैसे व्यापार समझौते मौजूद हैं, लेकिन खराब कार्यान्वयन और लगातार संघर्ष उनके प्रभाव को सीमित करते हैं।
- **घटते व्यापार अनुपात:** व्यापार-से-जीडीपी अनुपात 47.3% (2022) से गिरकर 42.94% (2024) हो गया।
- **बढ़ता घाटा:** क्षेत्रीय व्यापार घाटा \$204.1 बिलियन (2015) से बढ़कर \$339 बिलियन (2022) हो गया।
- **घटता द्विपक्षीय व्यापार:** भारत-पाकिस्तान व्यापार \$2.41 बिलियन (2018) से गिरकर \$1.2 बिलियन (2024) हो गया।

दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय मंच -

- **सार्क या SAARC (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन):** प्रमुख क्षेत्रीय संगठन, इसका उद्देश्य आर्थिक और क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देना है।
 - **साफ्टा (दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र):** टैरिफ और बाधाओं को कम करने के लिए सार्क के अंतर्गत व्यापार समझौता, हालांकि इसका कार्यान्वयन कमजोर है।
- **बिम्स्टेक या BIMSTEC (बहुक्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल):** दक्षिण एशिया को दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़ता है।

आगे की राह -

- **क्षेत्रीय सहयोग को प्राथमिकता देना:** आर्थिक सहयोग को द्विपक्षीय विवादों से ऊपर रखकर व्यापार को अराजनीतिक बनाना।
- **व्यापार बाधाओं को कम करना:** सीमा शुल्क को सरल बनाना, मानकों में सामंजस्य स्थापित करना, तथा SAFTA प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू करना।
- **विश्वास का निर्माण करना:** अविश्वास को कम करने के लिए संवाद, संघर्ष समाधान और लोगों के बीच संपर्क को प्रोत्साहित करना।
- **कनेक्टिविटी बढ़ाना:** व्यापार लागत को कम करने के लिए सीमा पार बुनियादी ढांचे, लॉजिस्टिक्स और डिजिटल लिंक में निवेश करना।
- **क्षेत्रीय मूल्य श्रृंखलाओं को बढ़ावा देना:** क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने के लिए पूरक उद्योगों को बढ़ावा देना।
- **सेवाओं और निवेश का लाभ उठाना:** सेवाओं में व्यापार और सीमा-पार निवेश की संभावनाओं का लाभ उठाएं।
- **क्षेत्रीय संस्थाओं को मजबूत बनाना:** अधिक प्रभावी शासन के लिए सार्क और संबंधित निकायों में सुधार और सशक्तिकरण करना।

स्रोत: [The Hindu](#)

भारत में मुद्रास्फीति, बेरोजगारी और विकास (2024-25)

संदर्भ

मई 2025 में भारत की मुद्रास्फीति दर में गिरावट आई, हालांकि, इस गिरावट के साथ बेरोजगारी में वृद्धि और आर्थिक विकास में मंदी आई, जिससे भारत के आर्थिक परिदृश्य में गहरी चुनौतियां सामने आईं।

डेटा -

- **मुद्रास्फीति:** मई 2025 में भारत की मुद्रास्फीति दर 2.8% रही, जो अप्रैल में 3.2% थी - जो सरकार के लक्ष्य से काफी नीचे है।
- **बेरोजगारी:** बेरोजगारी दर अप्रैल में 5.1% से बढ़कर मई 2025 में 5.8% हो गई (आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण)।
 - जबकि मुद्रास्फीति में गिरावट से उन लोगों को लाभ होता है जो पहले से ही रोजगार में लगे हैं (उनकी क्रय शक्ति धीरे-धीरे कम होती है), लेकिन बेरोजगारों को इससे कोई राहत नहीं मिलती।
- **जीडीपी वृद्धि:** जीडीपी वृद्धि 2023-24 में 9.2% से घटकर 2024-25 में 6.5% हो गई।

मुद्रास्फीति में कमी के प्रमुख कारक -

- **कृषि विकास में तीव्र वृद्धि:** कृषि एकमात्र ऐसा क्षेत्र था जो 2024-25 में उल्लेखनीय रूप से तेजी से बढ़ा, जिससे खाद्य आपूर्ति में वृद्धि हुई।
- **खाद्य आपूर्ति-मांग अंतर में कमी:** अन्य क्षेत्रों की तुलना में कृषि में तेज़ वृद्धि ने खाद्य कीमतों पर दबाव कम किया।
- **खाद्य-मूल्य मुद्रास्फीति में गिरावट:** खाद्य मुद्रास्फीति लगभग 11% (अक्टूबर 2024) से गिरकर 1% (मई 2025) से भी कम हो गई।
- **मौद्रिक नीति की सीमित भूमिका:** जून 2022 से RBI की अपरिवर्तित रेपो दर ने खाद्य मुद्रास्फीति में हाल की गिरावट को सीधे प्रभावित नहीं किया।

आकलन में समस्याएँ -

- **मौद्रिक नीति पर अत्यधिक जोर:** मुद्रास्फीति में परिवर्तन के लिए मुख्य कारण के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति - विशेष रूप से ब्याज दर समायोजन - को जिम्मेदार मानने की आम प्रवृत्ति है।
 - यह दृष्टिकोण अक्सर आपूर्ति पक्ष के कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज कर देता है, जैसे कि कृषि उत्पादन, जिसका भारत में खाद्य कीमतों और समग्र मुद्रास्फीति पर अधिक प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।
- **बेरोजगारी और विकास की उपेक्षा:** मुद्रास्फीति में गिरावट का जश्न मनाया जाता है, लेकिन बेरोजगारी और सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि जैसे महत्वपूर्ण संकेतकों को नजरअंदाज कर दिया जाता है।
 - उदाहरण के लिए, उस अवधि के दौरान जब मुद्रास्फीति 3.2% (अप्रैल 2025) से घटकर 2.8% (मई 2025) हो गई, बेरोजगारी वास्तव में 5.1% से बढ़कर 5.8% हो गई, और सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 9.2% (2023-24) से काफी धीमी होकर 6.5% (2024-25) हो गई।
- **मुद्रास्फीति संबंधी अपेक्षाओं की गलत व्याख्या:** नीति निर्माता अक्सर इस विचार पर भरोसा करते हैं कि मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण से जनता की अपेक्षाएं स्थिर रहेंगी।
 - तथापि, घरेलू मुद्रास्फीति की उम्मीदें लगातार ऊंची बनी हुई हैं, जो आरबीआई के लक्ष्य से काफी ऊपर हैं, जिससे पता चलता है कि मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण ने सार्वजनिक भावना को प्रभावी रूप से प्रभावित नहीं किया है।
- **संरचनात्मक चालकों की अनदेखी:** मुख्यधारा के मुद्रास्फीति विश्लेषण में अक्सर संरचनात्मक कारकों के प्रभाव को कम करके आंका जाता है, जैसे कि कृषि और गैर-कृषि क्षेत्रों की सापेक्ष विकास दर।

- खाद्य मुद्रास्फीति में हाल की तीव्र गिरावट मौद्रिक नीति में परिवर्तन की तुलना में कृषि उत्पादन में सुधार के कारण अधिक हुई है, जिससे क्षेत्रीय विकास गतिशीलता को ध्यान में रखने की आवश्यकता उजागर होती है।

क्या किया जाने की जरूरत है -

- **व्यापक नीति परिप्रेक्ष्य अपनाना:** केवल मूल्य स्थिरता पर ही नहीं, बल्कि विकास, रोजगार और मुद्रास्फीति पर भी समान रूप से ध्यान केंद्रित करना।
- **कृषि उत्पादकता को मजबूत करना:** खाद्य आपूर्ति को बनाए रखने और खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए कृषि में निवेश करें।
- **बेरोजगारी की समस्या का समाधान:** व्यापक आर्थिक प्रबंधन के साथ-साथ लक्षित रोजगार सृजन और कौशल विकास कार्यक्रमों को लागू करना।
- **डेटा-संचालित नीति-निर्माण को बढ़ावा देना:** प्रभावी आर्थिक निर्णय लेने के लिए व्यापक डेटा विश्लेषण (क्षेत्रीय विकास और आपूर्ति-पक्ष कारकों सहित) का उपयोग करें।
- **यथार्थवादी नीतिगत लक्ष्यों का संचार करना:** जनता को यह समझ प्रदान करें कि मुद्रास्फीति प्रबंधन के लिए मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

स्रोत: [The Hindu](#)

